।।श्री कृष्णः शरणं मम।।

सर्व देवः नमस्कारः

पापा के मित्र हैं आनन्द अंकल। जयपुर में रहते हैं। काफी बड़ा परिवार है उनका। क्रिसमस की छुट्टी में हमलोग उनके घर गए थे। उन्होंने अपने बंगले में एक सुंदर पूजा घर बनवाया है। हमलोगों को बड़े चाव से उन्होंने वह मंदिर दिखाया। पृष्ठ भूमि में महाभारत की युद्ध भूमि में पार्थ सारथि का बड़ा सा चित्र था। उसके सामने असंख्य देवी देवता विराज रहे थे। मुझे तो समझ में नहीं आया कि अंकल ने यह पूजा घर मन को शांत और एकाग्र करने के लिए बनाया है कि इस लोक से उस लोक में भटकने के लिए। खैर! हम सबने उनके बंगले की सुंदरता सराही और टिक गए। संयोग वश मुझे जो कमरा मिला उसकी खिड़की पूजा घर की ओर खुलती थी।

दूसरे दिन मैं सो कर उठी तो अंकल तो पूजा से निवृत्त हो चुके थे। थोड़ी देर में आंटी आई। उन्होंने एक सिरे से पूजा आरम्भ की। हर देवी या देवता को आचमन, प्रसाद, धूप, दीप आदि अर्पित करते करते उन्हें पौन घंटा लग गया। उसके बाद मैंने देखा, उनके पुत्र और पुत्र वधुएं अपने अपने समय से पूजा गृह में जाते तथा पांच दस मिनट में अपनी आराधना पूरी करके निकल जाते।

मौका पा कर मैंने आंटी से पूछा- 'आंटी! आप इतने सारे देवी देवताओं की पूजा क्यों करती हैं? क्या एक भगवान जी से आपका काम नहीं चलता?' वे बोली- 'बेटी हमलोग गृहस्थ हैं। हमें अनेक प्रकार के अलग अलग सुख चाहिए। कितनी प्रकार की समस्याएं आती है। अब देखो, कोई नया कार्य आरम्भ करना हो तो गणेश जी की पूजा बिना कैसे काम चलेगा? अपने सुहाग की रक्षा की प्रार्थना करनी हो तो गौरी मां की उपासना तो करनी ही होगी। सभी कुछ चाहिए इसलिए सभी की पूजा करनी पड़ेगी।'

बड़े भैया से पूछने पर उन्होंने बताया- 'मुझे इतने भगवानों की पूजा करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरा दृढ विश्वास है कि बालाजी के समान दूसरा कोई देवता नहीं। मैंने

जब से उनकी पूजा आरम्भ की है तब से मेरा व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ रहा है। मैं तो उनकी तस्वीर में सोने का फ्रेम लगवा रहा हूं।'

इसी प्रकार बड़ी भाभी किसी विशेष कामना से संतोषी मां की पूजा करती थी। छोटे भैया शिवजी के भक्त थे। छोटी भाभी राणी सती जी की उपासिका थी। और छोटू ने बताया- 'दीदी, मुझे तो बहुत डर लगा रहता है। घर में कोई भी मुझसे नाराज हो जाता है तो मेरी शामत आ जाती है। पूजा घर में भी मैं सोचता हूं कि इनमें से कोई भी नाराज हो गया तो? मैंने तो लिस्ट बना रखी है ताकि कोई छूट न जाए। लाइन से सबको प्रणाम कर लेता हूं। लेकिन दीदी, हनुमान जी को जरा ठीक से प्रणाम करता हूं ताकि रात को सूसू के लिए उठने में डर न लगे।'

सबकी दलीलें बढिया थी। अब मैं हिम्मत करके अंकल के पास गई। वे मुस्कुराए, बोले- 'बेटी मुझे अकेले रहना अच्छा नहीं लगता। भगवान को भी सपरिवार मैंने अपने मंदिर में स्थापित कर रखा है। ये सब देवी देवता भगवान का परिवार ही तो हैं। **सर्वदेवः नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।**' मैं खुश हो गई। वाह! क्या बात कही अंकल ने!

लेकिन मेरा शंकालु जिज्ञासु मन! इनमें से न किसी बात को स्वीकार कर पाया, न छोड़ पाया। मेरी जयपुर यात्रा इन्हीं के विषय में सोचते सोचते बीती। चिंतन समाधान का रूप लेकर निकलता नहीं तो मस्तक पर बोझ बन ही जाता है। लौट कर आई तो गीता मैय्या को सदा की भांति शांत, स्थिर मुस्कान के साथ स्वागत करते हुए पाया। मैं दौड़ कर उनसे लिपट गई। उन्होंने अपने आंचल से मुझे ढक लिया। बोली- 'हूं। मेरी रानी बिटिया जयपुर से बड़ा लगेज ले कर आई लगता है।'

मां मेरे मन की एक एक रेखा पढना जानती है और मेरी हर उलझन को सुलझा सकती है उनकी गोद से बड़ा तीर्थ और श्रेष्ठ आश्रय जगत् में दूसरा कुछ नहीं। उनके आंचल में छुप कर दूध पीती हूं तो लगता है- 'क्या कोई अमृत घट इसकी समानता कर सकता है?' मेरी यह ममतामयी मैय्या!

मैं एक सांस में सब कुछ बता गई और पूछा- 'मां! अंकल ने तो कह दिया 'सर्वदेवः नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।' लेकिन बात मुझे जमी नहीं। यह बात तो अंकल कहते हैं। लेकिन केशव स्वयं क्या कहते हैं? मां, तुम तो उनके दिल की बात जानती हो, तुम बताओ मुझे, सच क्या है? मुझे तो सब झूठ ही समझ में आता है।'

मां- 'बेटी केशव के सारे झूठ सच ही होते हैं।'

मैंने मुंह फुला लिया- 'मम्मी! तुम भी मुझे चिढा रही हो। ठीक ठीक बताओ न।'

बड़ा मजा आता है मैय्या से यूं रूठने में। क्योंकि जब भी रूठती हूं, मैय्या मुझे मनाने के लिए अपनी वीणा उठा लेती हैं। जहां उनकी वीणा के तार झंकृत हुए, भला कोई बोझ बना रह सकता है!

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्य देवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया।।
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।।
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्।।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति भद्भक्ता यान्ति मामपि।।

मां अपना अमृतपय पिला रही थी और मैं पी रही थी। मां ने वीणा रखी तो मैं पुनः इहलोक मैं लौट आई।

मां- 'कुछ समझी?'

मैं- 'समझी मम्मी! समझ गई केशव के दिल का हाल। बढिया माया रची है अल्प बुद्धि वालों को कामनाओं के जंजाल में फंसाने की। और साफ साफ कह भी दिया कि कामना के कारण जिनका ज्ञान नष्ट हो गया है वे अन्य देवताओं की पूजा करते हैं; और जो जो जिस जिसकी पूजा करता है मैं उसीके प्रति उसकी श्रद्धा को दृढ करते हुए उसकी कामना को पूरा करता हूं। लेकिन देवताओं की पूजा से मिलने वाले ये फल नाशवान होते हैं। और मम्मी, आपने यह भी बता दिया कि अनन्त आनन्द स्वरूप केशव तो उसी को मिलते हैं जो उन्हें भजता है। मम्मी! तुम चाहे जो भी कहो, लेकिन तुम्हारे छलिया केशव को बहुत गाली सुनाने का मन करता है। इतने नाटक रचने की क्या आवश्यकता थी? कोई किसी की भी पूजा करे, जब वे ही सबमें है तो सब पर प्रसन्न क्यों नहीं हो जाते? उनकी ओर से भेदभाव क्यों?'

मां- 'बेटी, वह इसलिए कि उन्हें पाना ये अल्प बुद्धि वाले चाहते ही नहीं । तुम्हीं बताओ, तुम्हारे जयपुर वाले भाभी-भैया क्या अपनी छोटी मोटी कामनाओं के जंजाल से बाहर निकलने को तैयार थे? यदि तुम भैया को कहती कि छोड़िये पैसों का चक्कर। केशव के गुण गाइये। बिना पैसे मिले ही आनन्द में सराबोर रहेंगे, तो क्या वे मानते? वे यही कहते कि तुम्हारा बिना पैसों वाला आनन्द अपने ही पाकेट में रखो। मुझे तो पैसों वाला ही आनन्द चाहिए।'

मैं- 'हाय मम्मी! आपने एकदम ठीक कहा। आप कैसे सबकी साइकोलॉजी समझती हैं! मैंने उनसे ठीक यही कहा था और उन्होंने हू ब हू इन्हीं शब्दों में मुझे उत्तर दिया था। ऐसा लगता है मानों आपने ही यह डायलाग उन्हें रटाया हो।'

मम्मी मुस्कुरा रही थी।

मैं- 'लेकिन मां! फिर यह जो अंकल ने कहा- सर्व देवः नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति, इसका क्या रहस्य है?'

मां- 'बेटी, बात यह है कि सभी देवताओं में तो क्या, सभी प्राणियों, पशु-पक्षी और कीट पतंगों में भी वही हैं। वे ही सभी यज्ञों के .....

मैं- 'अं ..... अं..... अं..... रुको मम्मी! मुझे बात याद आ गई। दो वीणा मुझे। आज आपकी बेटी गाएगी।'

अहं हि सर्व यज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च।

न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते।।

मां- 'बिल्कुल ठीक पकड़ा तुमने। केशव सभी यज्ञों के भोक्ता और प्रभु हैं। वे ही सभी देवताओं की शक्ति भी हैं। लेकिन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करने वाले सीमित फल के लिए सीमित शक्ति की पूजा करते हैं इसलिए उनके अनन्त गौरव को नहीं समझ पाते। छोटी सी लुटिया ले कर ही जाओगी तो गंगा की अथाह अनन्त जलराशि का लाभ कैसे मिलेगा? लक्ष्मी, दुर्गा, काली, गौरी की पूजा करने वालों को यह ध्यान में भी नहीं आता कि लक्ष्मी पति भी वे ही है और शक्ति पति भी वे ही हैं। देखो न, सामने तस्वीर टंगी रहती है पर किसी को दिखता नहीं कि लक्ष्मी तो नारायण के चरणों की चेरी है। उन्हें नारायण नहीं, केवल लक्ष्मी चाहिए। सत्य को अनदेखा कर वे लोग भ्रमलोक में जीते हैं।

अपने चारों ओर नजर दौड़ाओ। लोग किसी के रुतबे, किसी की पहुंच, किसी की जान पहचान, किसी की सिफारिश किसी की क्षमता, किसी के धन का लाभ उठाने के लिए तरह तरह के उपाय यानि यज्ञ करते रहते हैं। लेकिन सभी शक्तियों की शक्ति है आत्म शक्ति। आत्म उत्थान का प्रयत्न उनसे नहीं होता। अपने आप को सुधारे और ऊंचा उठाए बिना जो जगत में ऊंचा स्थान पाना चाहते है उनकी उन्नति यदि हो भी जाए तो क्षणिक ही होती है। इसीलिए केशव ने कहा- **अन्तवत्तु फलं तेषाम्।** आधार विहीनता के कारण यह उन्नति शीघ्र ही पतन में बदल जाती है।'

मैं- 'मम्मी, मैं समझ गई, सब समझ गई। लेकिन असली टॉपिक अभी तक गोल है। सब देवताओं का नमस्कार केशव को कहां गया? वे तो यही समझा रहे हैं कि किसी देवता का नमस्कार वे ग्रहण नहीं करते।'

मां- 'नहीं बेटी। तुमने सारी बात नहीं समझी। हम किसी भी देवता की पूजा जब इस भाव से करते है कि इसके द्वारा मैं उसी परमपिता परमात्मा की आराधना करता हूं जो ब्रह्माण्ड के कण कण में व्याप्त है, तो वह आराधना अनन्त गुण, ऐश्वर्य धाम परमात्मा की आराधना है। उसका फल अनन्त है।'

मैं- 'लेकिन मम्मी, जब ऐसी भावना हमारे मन में आ ही जाएगी तो फिर हम इतने सारे देवी देवताओं को पूजेंगे ही क्यों? फिर तो मुरली वाले, घुंघराली अलकों वाले केशव रूप परमात्मा का ही भजन करेंगे।'

मां- 'फिर कर गई न गलती। यदि तुमने इस धारणा को पकड लिया कि मैं तो कृष्ण के ही मंदिर में जाऊंगी, शिव के मंदिर में नहीं, तो तुमने भगवान को फिर से छोटा और सीमित बना दिया। क्या भगवान कृष्ण के रूप वाली मूर्ति में ही है और शिवालिंग में नहीं? देखो, भगवान को वासुदेव इसीलिए कहते हैं क्योंकि वे सबमें वास करने वाले हैं। तुम देवताओं को सीमित शक्ति वाला मान कर द्वेष करोगी तो उनके वासुदेव नाम को ही कलंकित करोगी। सच तो यह है कि हमें सभी प्राणियों में उन्हें देखना है। इसीकी शुरुआत होती है मूर्ति में उन्हें देखने से। यदि हमने यहीं से गड़बड़ी कर दी तो आगे तो ठीक रास्ता मिलेगा ही नहीं।'

मैं- 'उफ् मम्मी! मैं तो एकदम कनफ्यूज्ड हो गई हूं। नहीं सुनना मुझे यह सारा शास्त्रीय ज्ञान। तुम साफ शब्दों में बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए?'

मां- 'तुम्हें भगवान का कोई भी रूप जो सबसे अधिक आकर्षक लगता हो उसी की आराधना करो। लेकिन किसी भी मंदिर में जाओ, किसी भी तीर्थ में जाओ, तुम्हारी पूजा-उपासना की विधि कुछ भी हो, सब कुछ करते हुए यह भाव दृढ बना रहे कि यह सब कुछ एक ही वासुदेव की उपासना है। मंदिर के पूजा-यज्ञ आदि ही क्यों, तुम्हारा हर कर्म, जो तुम अपने माता-पिता, भाई-बहन, अपने देश, समाज और विश्व के लिए करती हो उनमें भी यही भाव रखो कि इन कर्मों के द्वारा मैं वासुदेव की ही पूजा कर रही हूं। यही सच्चा ज्ञान है। यही सच्ची उपासना है। ऐसे ज्ञानी बहुत दुर्लभ हैं।'

मैं- 'मम्मी, आपकी बात बहुत अच्छी लगी। अब इसे छन्दबद्ध करके गा भी दीजिए न। बात यह है कि जब आप गा कर कुछ बताती हैं तो वह सीधे मन पर अंकित हो जाता है और याद रहता है।'

मां ने वीणा उठाई और गाया-

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।।

मैंने मैय्या को प्रणाम किया। 'मां मैं तुम्हारी बेटी हूं। मुझे आशीर्वाद दो कि मैं इस ज्ञान को धारण कर सकूं।'

मां ने अपने वक्ष से लगा कर मुझे चूम लिया।

*****